International Journal of Engineering, Management, Humanities and Social Sciences Paradigms (IJEMHS)
Volume 34, Issue 01 and Publication Date: 28th June, 2022
An Indexed, Referred and Peer Reviewed Journal
ISSN (Online): 2347-601X
www.ijemhs.com

युवा भारत का समावेशी लोकतंत्र और युवा असंतोष

पुष्पा कुमारी

शोध छात्रा, राजनीति शास्त्र विभाग, बी0 एन0 मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार

सार

छात्रों और युवाओं ने राष्ट्र की वृद्वि और विकास में एक अद्वितीय और सराहनीय योगदान दिया है। किशोर (छात्र) चाहे किसी भी क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता का प्रयोग करें, वे निश्चित रूप से सपफल होंगे। शक्ति शब्द उपलब्धि की भावना व्यत्त करता है। छात्र शक्ति किसी भी तरह से समाज को बदलने की क्षमता र ता है। छात्र ऊर्जा को सही दिशा में लगाया जाए तो समाज के हित में अच्छे परिणाम सामने आएंगे। इतिहास से पता चलता है कि अमेरिकी क्रांति की समाप्ति के बाद से प्रत्येक संघर्ष आंदोलन में शिक्षार्थियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संघर्ष में छात्रों का अहम योगदान रहा है। विद्यार्थी शत्ति ही राष्ट्रीय शत्ति होती है, ऐसा अनेक विचारकों का कथन सत्य प्रतीत होता है। इसलिए राष्ट्र का पुनर्निर्माण तभी संभव है जब छात्र आबादी का सही मार्गदर्शन हो।

मुख्य शब्द– युवा, क्राति, विचारक, छात्र, आनदोलन, प्रशिक्षण, शोषण

विस्तार

आज के छात्र देश का भविष्य हैं। जिस प्रकार से छात्रों के व्यत्तित्व का निर्माण होता है, उसी प्रकार राष्ट्र का भविष्य भी उसी प्रकार का होगा। नतीजतन, एक छात्र का प्रशिक्षण समान होना चाहिए। उन्हें प्राप्त होने वाले प्रशिक्षण से छात्र किसी भी क्षेत्र में देश का नेतृत्व करेंगे। इसलिए, उचित निर्देश प्राप्त करने के लिए छात्रों को अपने प्रशिक्षण के मार्ग में पूरी तरह से जागरूक और सतर्क रहना चाहिए। हमें छात्रों के समग्र विकास के लिए आवश्यक संसाधन भी उपलब्ध कराने चाहिए।

एक निश्चित आदर्श, निश्चित उद्देश्य और निश्चित दिशा के अभाव में छात्र संघ निरुद्देश्य भटकता रहता है और राजनीतिक समूह, निहित स्वार्थी तत्व और कभी–कभी असामाजिक तत्व अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए छात्रों का शोषण करते हैं। आज का दिन छात्रों को दि ाता है कि उनका भविष्य अनिश्चित है। यदि वे अपने भविष्य को निश्चित रूप से जानते हैं तो उनका विकास असंभव है। आज, अनिश्चित भविष्य की संभावनाओं के कारण छात्रों के बीच एक तनावपूर्ण माहौल बना हुआ है। आज छात्रों के सामने बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप में है। आवश्यक डिग्री होने के बावजूद, आज के स्नातक एक साधरण नौकरी भी प्राप्त करने में असमर्थ हैं। पैरवी, भाई–भतीजावाद और सभी क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण छात्रों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जातिवाद, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, पैरवी और भाई–भतीजावाद के परिणामस्वरूप छात्रों में तनाव प्रचलित है। आज जिस माहौल में छात्रों को सी ना चाहिए, उसका हर जगह अभाव है। उपरोत्त मुद्दों के कारण छात्रों का भविष्य अनिश्चित है और वे गलत दिशा में जा रहे हैं। आज शिक्षा का मंदिर, जहाँ अनुशासन और विवेक का वातावरण होना चाहिए, अब गंदी राजनीति का अ ाड़ा है। शिक्षकों के साथ–साथ छात्रों ने भी अपने राजनीतिक लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षा के प्राथमिक उद्देश्य की उपेक्षा की है। इसलिए, शिक्षा का मंदिर संपत्ति के बजाय समाज के लिए

एक दायित्व बन गया है। प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य असाधरण मानवीय चरित्र का निर्माण करना था। आज इस उद्देश्य का सर्वत्र अभाव है।

अमृत की प्राप्ति के लिए जिस ज्ञान की आवश्यकता होती है वह केवल तपस्या से ही प्राप्त किया जा सकता है। यह हमारे पूर्वजों का सहज विश्वास था। हालांकि आज स्थिति उलट है। आज छात्रों और युवा पीढ़ी में असंतोष, गुस्सा और निराशा व्याप्त है। शिक्षा जगत पूरी तरह से जहरीले वातावरण में विकसित हो चुका है। पूरे विश्वविद्यालय परिसर में हिंसा और अशांति का माहौल व्याप्त है। आए दिन तोड़फोड़ की घटनाएं दे ने को मिल रही हैं।

दुनिया के इतिहास में किसी भी देश या समय अवधि में पंजीकृत महिला छात्रों की संख्या में सालाना 5–6 प्रतिशत से अधिक की वृद्वि नहीं हुई है, लेकिन भारत में यह वृद्वि सालाना चार से पांच गुना अधिक है। नतीजतन, उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में लगातार गिरावट आ रही है। दु की बात यह है कि कभी–कभी अच्छी तरह से योग्य और मेहनती छात्रों को प्रवेश से वंचित कर दिया जाता है जबकि धनी परिवारों के अयोग्य छात्रों को प्रवेश दिया जाता है, ऐसे भी व्यत्ति हैं जिनकी मार्कशीट और सर्टिफिकेट जाली हैं। हैं। वे शिक्षा के क्षेत्र में अनैतिक मार्केटिंग में लिप्त हैं। जहां तक लड़कियों की बात है तो ज्यादातर कॉलेज में सिर्फ अपने नाम का एक गहना जोड़ने और शादी के बाजार में अपनी वैल्यू बढ़ाने के लिए दा ि ला लेती हैं। नौकरी के बाजार में शिक्षा पर अत्यधिक जोर के कारण, छात्र डिग्री प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। इस प्रकार, विश्वविद्यालय शिक्षा आज रोजगार, विवाह, या व्यवसाय में प्रवेश के लिए महज एक पासपोर्ट बनकर रह गई है।

विश्वविद्यालय अध्ययन के स्तर में गिरावट में योगदान देने वाला दूसरा प्रमु कारक प्रशिक्षक हैं। उनका चयन और नियुत्ति शेडड्यूलिंग भ्रष्टाचार से भरा हुआ है। एक युवा व्यत्ति कैसे योग्य हो सकता है यदि प्रशिक्षकों में स्वयं विशेषज्ञ क्षमता और ज्ञान की कमी हो? यही कारण है कि विश्वविद्यालयों में अध्ययन की मात्रा में वृद्वि हो रही है जबकि उसकी गुणवत्ता में गिरावट आ रही है। इस तथ्य के बावजूद कि हमारे शिक्षा प्रशासक, शिक्षाविद् और राष्ट्रीय नेता स्थिति से अच्छी तरह वाकिफ हैं, यह `दजनक है कि इस संबंध में पर्याप्त काम नहीं किया जा रहा है। इस संबंध में भारत के नियंत्रक एवं महाले ा परीक्षक ने 5 या 6 वर्ष पूर्व एक रिपोर्ट में कहा था कि उच्च शिक्षा अनुदान आयोग के बजट की यह राशि, जो संख्यात्मक विस्तार के लिए आवंटित की गई थी, समाप्त हो चुकी थी, लेकिन गुणात्मक विकास के लिए अभी भी उपलब्ध थी। सीमित बजट के बावजूद केवल पचास प्रतिशत र्च किया गया, शेष समाप्त हो गया। यह हमारी निष्क्रियता को दर्शाता है। कॉलेज के प्रशिक्षकों को उनकी प्रभावशीलता के लिए पुरस्कृत किया जाना चाहिए और उनकी गलतियों के लिए दंडित किया जाना चाहिए। लेकिन हमारे शिक्षण संस्थानों में ठीक इसके विपरीत हो रहा है। कार्य की गुणवत्ता का कोई महत्व नहीं है। किसके पास कितनी पहुंच है और कितनी र्च करने की ताकत है, यह जानना जरूरी है। सुविचारित और कर्तव्यनिष्ठ व्यत्तियों के रूप में शुरुआत करने वाले शिक्षक अंततः उदासीन हो जाते हैं। इस प्रकार शिक्षकों की अपने पेशे के प्रति निष्ठा और समर्पण की कमी वास्तव में हमारे शिक्षण संस्थानों को ो ला कर रही है।

अधिकांश कॉलेज शिक्षण समय व्यतीत करने का साधन बन गया है। शिक्षा के लेबल में जो कुछ भी होता है, छात्रों का दिमाग समय के साथ अधिक से अधिक निष्क्रिय हो जाता है, और वे गहरी निराशा

व्यत्त करते हैं। विश्वविद्यालय के बहुसंख्यक विषयों का जीवन से कोई संबंध नहीं होता, इसलिए छात्रों का ज्ञान उनके मन–मस्तिष्क का हिस्सा बनने और जीवन के व्यवहार में परिवर्तन करने के बजाय परीक्षा पास करने का जरिया बन जाता है और पास होते ही वे उसे अनदे ा कर देते हैं। हैं। छात्रों को निर्देश की व्याख्यान विधि नीरस और अरुचिकर लगती है। नतीजतन, विश्वविद्यालय शिक्षा पर भारी मात्रा में समय, प्रयास और पैसा बर्बाद होता है।

जहां तक परीक्षाओं की बात है तो स्थिति भी कम गंभीर नहीं है। दरअसल, आधुनिक समय में विश्वविद्यालय की परीक्षा एक मजाक बन गई है। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि हमारे विद्यापीठ, शिक्षा के केंद्र, जो कभी लोगों के लिए अपार आदर और श्रद्वा के प्रतीक थे, और फिर जिनके आचार्य चरक और गुरुओं के आगे बड़े–बड़े राजा–महाराजा भी झुकते थे, अब इतने बेबस हो गए हैं। हमें विश्वास है कि पुलिस की सहायता के बिना हम परीक्षा भी नहीं दे सकते। एक जमाने में शिक्षक और छात्र के बीच का पवित्र, निस्वार्थ रिश्ता इस हद तक बिगड़ गया था कि छात्र अब बिना किसी हिचकिचाहट के अपने शिक्षकों पर हमला करते हैं। इन सभी परिस्थितियों के कारण हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। आज परीक्षाओं का प्रारूप और मूल्यांकन प्रक्रिया दोनों ही त्रुटिपूर्ण हैं। छात्रों की योग्यता का सही मूल्यांकन करना भी असंभव है। आज विश्वविद्यालय परीक्षाओं में साहित्यिक चोरी की बीमारी से हर कोई चिंतित है। आज, व्यापार या वाणिज्य का एक बड़ा सौदा आयोजित किया जाता है

छात्र असंतोष उच्च शिक्षा के मार्ग में एक बड़ी बाधा है। हालांकि यह निर्धारित करना मुश्किल है कि क्या छात्र असंतोष वर्तमान शिक्षा प्रणाली का परिणाम है या छात्र असंतोष के परिणामस्वरूप शिक्षा का स्तर गिर रहा है, इसमें कोई संदेह नहीं है। आज छात्रों में व्यापक निराशा, असंतोष और तनाव है। ऐसे परिदृश्य में, किसी भी दिशा से थोड़ी सी भी आलोचना होने पर, छात्र समूह भड़क उठते हैं, अपनी कक्षाओं को छोड़ देते हैं, और घेराव, हड़ताल और तोड़–फोड़ में संलग्न हो जाते हैं। जब राजनीतिक दल इन छात्रों का समर्थन करते हैं तो स्थिति और भी विकट हो जाती है। राष्ट्र के विभिन्न राजनीतिक दलों ने ऐतिहासिक रूप से छात्र ाक्ति का अपने स्वार्थ के लिए उपयोग किया है। यही कारण है कि वे छात्रसंघ चुनाव में गहरी दिलचस्पी लेते हैं और अपने उम्मीदवार की जीत सुनिश्चित करने के लिए भरसक प्रयास करते हैं। इस प्रकार, निजी स्वार्थ कॉलेज परिसर में घुसपैठ करते हैं, और एक निरंतर संघर्ष और युद्व जारी रहता है।

यह एक आम गलत धरणा है कि इन सभी मामलों के लिए केवल छात्र ही जिम्मेदार हैं। ऊपर वर्णित घटनाओं के लिए छात्र, शिक्षक, विश्वविद्यालय प्रशासक और सरकार समान रूप से जिम्मेदार हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, कवि रवींद्र नाथ ठाकुर, महामना पंडित मदन मोहन मालवीय, और ब्रह्मर्षि बिनोवा भावे ने देश के आधुनिक परिवेश, प्रवृत्तियों और जरूरतों के आलोक में भारत की शिक्षा प्रणाली को परिष्कृत और पुनर्गठित करने का काम किया है। व्यापक विचार–विमर्श के बाद दिए गए सुझावों को यह देश पूरी तरह से भूल चुका है। सरकारी शिक्षा कार्यक्रम अब सुझावों, नौकरशाहों के हितों या सुविधा पर आधारित नहीं हैं, और इस `ल में, भारी मात्रा में राजस्व निधि बार–बार र्च की जाती है। और बार–बार इस `ल पर भारी मात्रा में राजकोष का पैसा र्च किया जाता है। अपनी लाल फीतों में ब्रिटिश साम्राज्य के ंडहरों के ये र वाले गाँधी और नेहरू के शिष्यों की शान पर कब्जा जमाने में कामयाब रहे हैं. और

देश की युवा पीढ़ी को पागलपन के रास्ते सरपट दौड़ने को कहा है। आज के शिक्षण संस्थानों का वही हाल है, जो द्वापर के अंत में यादव शासित क्षेत्रों में था।

हम वास्तव में इस गंभीर स्थिति के लिए एक विशिष्ट समूह या व्यक्ति को दोषी ठहरा सकते हैं। फसल के लिए न केवल पौधे और किसान जिम्मेदार हैं, बल्कि पृथ्वी और आकाश भी हैं। सू ी धरती और सू ` आसमान के बीच की जमीन किसान के पसीने से सींची जा सकती थी। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि शिक्षक भी कई अवांछित छात्र विशेषताओं के लिए जिम्मेदारी लेने को तैयार हैं। हालांकि, व्यापक उन्माद के लिए अंतिम जिम्मेदारी समग्र समाज के पर्यावरण और प्रशासनिक ढांचे के साथ है। आग्नेयास्त्रों से लैस, सेना और पुलिस, जो शासक पदानुक्रम के ऊपर बैठते हैं और व्यक्तिगत दुश्मनी, दुनिया, क्रूरता और झूठ का जाल फैलाते हैं, एक अनुशासित और शांतिपूर्ण शैक्षिक वातावरण स्थापित नहीं कर सकते।

निष्कर्ष

पंडित मदन मोहन मालवीय, कवि रवींद्रनाथ ठाकुर, आचार्य नरेंद्र देव, डॉ. गंगा नाथ झा, और पंडित ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे लोगों को शिक्षा जगत के स्वस्थ रहने के लिए शिक्षण संस्थानों में सर्वोच्च सम्मान देना चाहिए। अतः बुद्वि जीवियों को सरकारी सेवक बना देने से अगली पीढ़ी को ऊपर उठाने का काम नहीं दिया जा सकता। आज, हालांकि, स्थिति इतनी विकट है कि हमें स्वर्गीय पी.भी–काने जैसे कुलपतियों को याद करना चाहिए। चौबीस वर्ग फुट के सेल में अपना पूरा जीवन व्यतीत करने वालों और ट्राम के माध्यम से काम करने के लिए जाने वालों की उपस्थिति ने आध्यात्मिक अनुशासन और तपस्या का माहौल बनाया जो शैक्षणिक संस्थानों में नहीं है। यह भारत में संभव है, लेकिन कानूनी करिश्मा, प्रशासनिक चालें और सैन्य अभ्यास अपर्याप्त हैं। विभिन्न विद्वानों ने ाक्ति की अवधरणा को भिन्न–भिन्न प्रकार से वर्णित किया है। शक्ति की विभिन्न व्याख्याएँ मौजूद हैं। ाक्ति के कई स्रोत हैं और कई प्रकार के ाक्ति–संबंध हैं, जैसे प्रभाव ाक्ति, आदि। ाक्ति, प्रभाव और ाक्ति की अवधरणाएँ, दूसरों के बीच, निकट से संबंधित हैं।

संदर्भ

1- योगेन्द्र शर्मा – ''शिक्षा, शिक्षार्थी और शिक्षक समाजकल्याण अगस्त 1985.
2- नानक चन्द्र – युवा शक्ति–तोड़ फोड़ बनाम सामाजिक दायित्व – समाजकल्याण मार्च 1982.
3- सम्पादकीय (प्रदीप पंत) – अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष एक नई शुरूआत का अवसर समाज कल्याण फरवरी 1985.
4- आशरानी व्होरा – अन्तराष्ट्रीय युवावर्ष और राष्ट्रीय युवा संकल्प समाजकल्याण अगस्त1985.
5- पटाभि सीता रमैया –''महात्मागांधी का समाजवाद''